IJARSCT
International Journal of Advanced Research in Science, Communication and Technology
International Open-Access, Double-Blind, Peer-Reviewed, Refereed, Multidisciplinary Online Journal
ISSN: 2581-9429
Volume 6, Issue 2, March 2026
Impact Factor: 8.2

स्वयं सहायता समूहों का महिलाओं की सामाजिक प्रतिष्ठा पर प्रभाव : लैंगिक समानता के विशेष संदर्भ में

डॉ शारदा सोनी

सहा प्राध्यापक (समाजशास्त्र)

शासकीय महाविद्यालयरैगाँव, सतना(म.प्र.)

सारांश

भारतीय समाज में महिलाओं की सामाजिक स्थिति ऐतिहासिक रूप से पितृसत्तात्मक संरचना से प्रभावित रही है, जिसके कारण निर्णय-निर्माण, संसाधनों पर नियंत्रण और सार्वजनिक जीवन में उनकी भागीदारी सीमित रही। स्वयं सहायता समूह (Self Help Groups–SHGs) ने इस स्थिति में परिवर्तन लाने का एक प्रभावी माध्यम प्रदान किया है। सामूहिक बचत, लघु ऋण, प्रशिक्षण, जागरूकता और सामाजिक सहभागिता के माध्यम से SHG महिलाओं की आर्थिक आत्मनिर्भरता के साथ-साथ उनकी सामाजिक प्रतिष्ठा और लैंगिक समानता को भी सुदृढ़ करते हैं। प्रस्तुत शोध आलेख में SHG के माध्यम से महिलाओं की सामाजिक पहचान, पारिवारिक निर्णय क्षमता, सार्वजनिक सहभागिता और सामाजिक व्यवहार में आए परिवर्तन का विश्लेषण किया गया है। अध्ययन से स्पष्ट होता है कि SHG महिलाओं को आश्रित भूमिका से सक्रिय सामाजिक नागरिक में परिवर्तित करता है, हालांकि सामाजिक मानसिकता, शिक्षा और संरचनात्मक बाधाएँ इस परिवर्तन की गति को प्रभावित करती हैं।

DOI: 10.48175/568

IJARSCT
International Journal of Advanced Research in Science, Communication and Technology
International Open-Access, Double-Blind, Peer-Reviewed, Refereed, Multidisciplinary Online Journal
ISSN: 2581-9429
Volume 6, Issue 2, March 2026
Impact Factor: 8.2

प्रस्तावना

भारतीय समाज में महिलाओं की सामाजिक स्थिति ऐतिहासिक रूप से पितृसत्तात्मक संरचना से प्रभावित रही है, जिसके कारण उन्हें लंबे समय तक परिवार की सीमित भूमिकाओं तक ही सीमित रखा गया। आर्थिक संसाधनों, शिक्षा और निर्णय-निर्माण में उनकी भागीदारी अपेक्षाकृत कम रही, परिणामस्वरूप सामाजिक प्रतिष्ठा और सार्वजनिक जीवन में उनकी पहचान कमजोर बनी रही। यद्यपि संविधान ने महिलाओं को समान अधिकार प्रदान किए, परन्तु व्यवहारिक स्तर पर लैंगिक असमानता विशेष रूप से ग्रामीण और अर्द्धशहरी क्षेत्रों में स्पष्ट रूप से दिखाई देती रही है।

ऐसी परिस्थिति में स्वयं सहायता समूह (Self Help Groups–SHGs) महिलाओं के सशक्तिकरण का एक प्रभावी माध्यम बनकर उभरे हैं। SHG केवल आर्थिक सहयोग का संगठन नहीं है, बल्कि सामाजिक जागरूकता और सामूहिक शक्ति का मंच भी है। सामूहिक बचत, लघु ऋण, प्रशिक्षण और नियमित बैठकों के माध्यम से महिलाएँ आर्थिक गतिविधियों से जुड़ती हैं तथा सार्वजनिक जीवन में सक्रिय भागीदारी करने लगती हैं। इससे उनके आत्मविश्वास, निर्णय-निर्माण क्षमता और सामाजिक स्वीकृति में वृद्धि होती है।

स्वयं सहायता समूहों के माध्यम से महिलाएँ न केवल आय अर्जित करती हैं, बल्कि परिवार और समाज में सम्मानजनक स्थान भी प्राप्त करती हैं। वे शिक्षा, स्वास्थ्य, स्वच्छता, घरेलू हिंसा और सामाजिक कुरीतियों जैसे मुद्दों पर अपनी आवाज उठाने लगती हैं, जिससे लैंगिक समानता की भावना विकसित होती है। इस प्रकार SHG महिलाओं को आश्रित भूमिका से सक्रिय सामाजिक नागरिक में परिवर्तित करने की प्रक्रिया का महत्वपूर्ण साधन है।

IJARSCT

International Journal of Advanced Research in Science, Communication and Technology

International Open-Access, Double-Blind, Peer-Reviewed, Refereed, Multidisciplinary Online Journal

ISSN: 2581-9429 Volume 6, Issue 2, March 2026 Impact Factor: 8.2

सामाजिक प्रतिष्ठा और लैंगिक समानता : सैद्धांतिक परिप्रेक्ष्य

सामाजिक प्रतिष्ठा (Social Prestige/Status) से आशय समाज में व्यक्ति को प्राप्त सम्मान, मान्यता और प्रभाव से है। समाजशास्त्रीय दृष्टि से यह केवल आर्थिक आय या संपत्ति पर आधारित नहीं होती, बल्कि व्यक्ति की भूमिका, निर्णय-निर्माण क्षमता, सामाजिक सहभागिता तथा सांस्कृतिक स्वीकृति पर निर्भर करती है। पारंपरिक समाजों में सामाजिक प्रतिष्ठा का निर्धारण प्रायः लिंग, आयु, जाति और पेशे के आधार पर होता रहा है, जिसमें महिलाओं की स्थिति अपेक्षाकृत निम्न मानी गई। उन्हें मुख्यतः घरेलू कार्यों तक सीमित रखा गया, जिसके कारण सार्वजनिक जीवन में उनकी पहचान सीमित रही।

लैंगिक समानता (Gender Equality) का अर्थ महिलाओं और पुरुषों को सामाजिक, आर्थिक और राजनीतिक अवसरों में समान अधिकार और सम्मान मिलना है। इसमें संसाधनों तक समान पहुँच, शिक्षा और स्वास्थ्य में समान अवसर, तथा निर्णय-निर्माण में बराबरी की भागीदारी शामिल है। समाजशास्त्र में इसे सामाजिक न्याय और मानवाधिकारों का अनिवार्य तत्व माना जाता है। जब समाज में किसी एक लिंग को अधिक शक्ति और दूसरे को निर्भरता की स्थिति में रखा जाता है, तब असमानता उत्पन्न होती है और सामाजिक विकास बाधित होता है।

पितृसत्तात्मक व्यवस्था में शक्ति और संसाधनों का नियंत्रण मुख्यतः पुरुषों के पास रहता है, जिससे महिलाओं की सामाजिक प्रतिष्ठा सीमित रहती है। स्वयं सहायता समूह जैसे सामूहिक संगठन इस असंतुलन को कम करने का प्रयास करते हैं। आर्थिक भागीदारी, सामूहिक निर्णय और सामाजिक नेटवर्क के माध्यम से महिलाएँ सार्वजनिक जीवन में सक्रिय होती हैं, जिससे उनकी सामाजिक स्थिति मजबूत होती है और लैंगिक समानता की दिशा में परिवर्तन संभव होता है।

इस प्रकार सामाजिक प्रतिष्ठा और लैंगिक समानता परस्पर संबंधित अवधारणाएँ हैं। जब महिलाओं को समान अवसर, सम्मान और निर्णय अधिकार प्राप्त होते हैं, तब उनकी सामाजिक प्रतिष्ठा बढ़ती है और समाज अधिक संतुलित एवं न्यायपूर्ण बनता है।

स्वयं सहायता समूह की अवधारणा

स्वयं सहायता समूह (Self Help Group – SHG) समान सामाजिक-आर्थिक पृष्ठभूमि वाले 10 से 20 व्यक्तियों, विशेषतः महिलाओं, का एक स्वैच्छिक लघु संगठन होता है जिसका उद्देश्य सामूहिक सहयोग, बचत और पारस्परिक ऋण के माध्यम से आर्थिक एवं सामाजिक सशक्तिकरण प्राप्त करना है। इसकी मूल भावना "स्वयं सहायता द्वारा विकास" पर आधारित होती है, अर्थात् समूह के सदस्य अपनी समस्याओं के समाधान के लिए बाहरी सहायता पर निर्भर रहने के बजाय सामूहिक संसाधनों और सहयोग का उपयोग करते हैं।

SHG की अवधारणा इस विचार पर आधारित है कि समाज के कमजोर वर्ग, विशेषकर महिलाएँ, व्यक्तिगत रूप से संसाधनों तक पहुँच नहीं बना पातीं, लेकिन सामूहिक रूप से संगठित होकर वे आर्थिक और सामाजिक बाधाओं को पार कर सकती हैं। समूह के सदस्य नियमित रूप से छोटी-छोटी बचत जमा करते हैं, जिससे एक सामूहिक निधि तैयार होती है। इसी निधि से जरूरतमंद सदस्यों को लघु ऋण प्रदान किया जाता है और बाद में बैंकिंग प्रणाली से जुड़कर बड़े ऋण भी प्राप्त किए जाते हैं।

यह केवल वित्तीय व्यवस्था नहीं है, बल्कि सामाजिक सीखने की प्रक्रिया भी है। समूह बैठकों में महिलाएँ अनुभव साझा करती हैं, समस्याओं पर चर्चा करती हैं और सामूहिक निर्णय लेती हैं। इससे उनमें आत्मविश्वास, नेतृत्व क्षमता और सामाजिक जागरूकता विकसित होती है।

IJARSCT
International Journal of Advanced Research in Science, Communication and Technology
International Open-Access, Double-Blind, Peer-Reviewed, Refereed, Multidisciplinary Online Journal
ISSN: 2581-9429
Volume 6, Issue 2, March 2026
Impact Factor: 8.2

इस प्रकार स्वयं सहायता समूह आर्थिक गतिविधियों को बढ़ावा देने के साथ-साथ सामाजिक पूंजी का निर्माण करता है, जो महिलाओं को आश्रित भूमिका से निकालकर आत्मनिर्भर और सक्रिय सामाजिक भागीदार बनाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है।

सामाजिक प्रतिष्ठा पर SHG का प्रभाव

स्वयं सहायता समूह (Self Help Group – SHG) महिलाओं की सामाजिक प्रतिष्ठा को बढ़ाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं। पारंपरिक समाज में महिलाओं की पहचान मुख्यतः घरेलू कार्यों तक सीमित रहती थी, जिसके कारण उन्हें निर्णय-निर्माण और सार्वजनिक जीवन में कम महत्व मिलता था। SHG के माध्यम से जब महिलाएँ आर्थिक, सामाजिक और सामुदायिक गतिविधियों में सक्रिय भागीदारी करने लगती हैं, तो उनकी स्थिति परिवार और समाज दोनों में सुदृढ़ होती है।

सबसे पहले, आर्थिक योगदान सामाजिक सम्मान को बढ़ाता है। जब महिलाएँ समूह के माध्यम से आय अर्जित करती हैं और परिवार की आवश्यकताओं में सहयोग देती हैं, तो परिवार के सदस्य उनके विचारों को महत्व देने लगते हैं। आर्थिक निर्भरता कम होने से उनकी पहचान आश्रित के बजाय सहभागी सदस्य के रूप में स्थापित होती है।

दूसरे, निर्णय-निर्माण में भागीदारी बढ़ती है। SHG की बैठकों में चर्चा और सामूहिक निर्णय लेने का अभ्यास महिलाओं को घर के भीतर भी अपनी राय रखने का आत्मविश्वास देता है। वे बच्चों की शिक्षा, स्वास्थ्य, कृषि और खर्च से जुड़े निर्णयों में सक्रिय भूमिका निभाने लगती हैं, जिससे परिवार में सम्मान बढ़ता है।

तीसरे, सामाजिक संपर्क और पहचान का विस्तार होता है। बैंक, पंचायत और सरकारी कार्यालयों से संपर्क के कारण महिलाएँ सार्वजनिक मंचों पर अपनी उपस्थिति दर्ज कराती हैं। इससे

IJARSCT
International Journal of Advanced Research in Science, Communication and Technology
International Open-Access, Double-Blind, Peer-Reviewed, Refereed, Multidisciplinary Online Journal
ISSN: 2581-9429
Volume 6, Issue 2, March 2026
Impact Factor: 8.2

उनका आत्मविश्वास बढ़ता है और समुदाय में उन्हें जिम्मेदार नागरिक के रूप में स्वीकार किया जाता है।

चौथे, सामाजिक जागरूकता और नेतृत्व विकसित होता है। समूह के माध्यम से महिलाएँ स्वच्छता, शिक्षा, घरेलू हिंसा और नशामुक्ति जैसे मुद्दों पर सामूहिक पहल करती हैं, जिससे समाज में उनकी छवि सकारात्मक और प्रभावशाली बनती है।

इस प्रकार SHG महिलाओं की सामाजिक प्रतिष्ठा को केवल आर्थिक नहीं बल्कि सामाजिक और मनोवैज्ञानिक स्तर पर भी सुदृढ़ करता है, जिससे वे परिवार और समुदाय में सम्मानित स्थान प्राप्त करती हैं।

लैंगिक समानता पर SHG का प्रभाव

स्वयं सहायता समूह (Self Help Groups – SHGs) महिलाओं और पुरुषों के बीच पारंपरिक असमानताओं को कम करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं। पितृसत्तात्मक समाज में संसाधनों, निर्णय-निर्माण और सामाजिक स्वतंत्रता पर पुरुषों का नियंत्रण अधिक रहा है, जिसके कारण महिलाएँ आश्रित स्थिति में रहती थीं। SHG महिलाओं को आर्थिक, सामाजिक और मनोवैज्ञानिक रूप से सक्षम बनाकर इस असंतुलन को धीरे-धीरे संतुलित करता है।

सबसे पहले, आर्थिक आत्मनिर्भरता लैंगिक समानता की आधारशिला बनती है। जब महिलाएँ आय अर्जित करने लगती हैं, तो परिवार में उनकी उपयोगिता और सम्मान बढ़ता है। पति-पत्नी के संबंध सहयोगात्मक होने लगते हैं और घरेलू निर्णयों में महिलाओं की भागीदारी बढ़ जाती है। इससे परिवार में समान अधिकार की भावना विकसित होती है।

दूसरे, निर्णय-निर्माण में सहभागिता बढ़ती है। SHG की बैठकों में चर्चा और मतदान की प्रक्रिया महिलाओं को अपनी राय व्यक्त करने का अभ्यास देती है। इसका प्रभाव घर और समुदाय

DOI: 10.48175/568

IJARSCT
International Journal of Advanced Research in Science, Communication and Technology
International Open-Access, Double-Blind, Peer-Reviewed, Refereed, Multidisciplinary Online Journal
ISSN: 2581-9429
Volume 6, Issue 2, March 2026
Impact Factor: 8.2

दोनों स्तरों पर दिखाई देता है – महिलाएँ बच्चों की शिक्षा, स्वास्थ्य, विवाह और आर्थिक निवेश से जुड़े निर्णयों में सक्रिय भूमिका निभाती हैं।

तीसरे, सामाजिक दृष्टिकोण में परिवर्तन आता है। जब महिलाएँ सार्वजनिक गतिविधियों, ग्रामसभा और सामुदायिक कार्यक्रमों में भाग लेने लगती हैं, तो समाज उनकी क्षमता को स्वीकार करने लगता है। इससे पारंपरिक धारणाएँ कमजोर होती हैं और पुरुषों का दृष्टिकोण भी सकारात्मक बनता है।

चौथे, अधिकारों के प्रति जागरूकता बढ़ती है। SHG के माध्यम से महिलाएँ कानूनी अधिकार, स्वास्थ्य, शिक्षा और हिंसा के विरुद्ध संरक्षण के बारे में जानकारी प्राप्त करती हैं। इससे वे अन्याय के खिलाफ आवाज उठाने में सक्षम होती हैं, जो वास्तविक लैंगिक समानता की दिशा में महत्वपूर्ण कदम है।

इस प्रकार SHG महिलाओं को आश्रित भूमिका से निकालकर साझेदारी की स्थिति में लाता है और परिवार, समाज तथा समुदाय में संतुलित संबंध स्थापित कर लैंगिक समानता को सुदृढ़ करता है।

मनोवैज्ञानिक परिवर्तन

स्वयं सहायता समूह (Self Help Groups – SHGs) महिलाओं में केवल आर्थिक ही नहीं बल्कि गहरे मनोवैज्ञानिक परिवर्तन भी उत्पन्न करते हैं। पारंपरिक परिस्थितियों में अनेक महिलाएँ आत्मविश्वास की कमी, संकोच, भय और सामाजिक निर्भरता की भावना से ग्रस्त रहती हैं। परिवार और समाज में सीमित भूमिका होने के कारण वे अपने विचार खुलकर व्यक्त नहीं कर पातीं। SHG इस स्थिति को बदलकर उनमें आत्मविश्वास और स्वायत्तता की भावना विकसित करता है।

ISSN: 2581-9429
Impact Factor: 8.2

समूह की नियमित बैठकों में सहभागिता से महिलाओं का संकोच कम होता है और वे संवाद करना सीखती हैं। अपने अनुभव साझा करने और सामूहिक निर्णय लेने की प्रक्रिया उन्हें मानसिक रूप से सशक्त बनाती है। जब उनकी राय को महत्व मिलता है, तो आत्मसम्मान (self-esteem) बढ़ता है और वे स्वयं को सक्षम समझने लगती हैं।

आर्थिक गतिविधियों में भागीदारी से उनमें उपलब्धि की भावना उत्पन्न होती है। आय अर्जित करने पर वे अपनी क्षमता का अनुभव करती हैं, जिससे हीनभावना समाप्त होती है और आत्मनिर्भरता की भावना विकसित होती है। इससे भय और असुरक्षा की जगह साहस और पहल करने की प्रवृत्ति विकसित होती है।

SHG सामाजिक सहयोग का वातावरण भी प्रदान करता है। समूह के सदस्य एक-दूसरे की समस्याएँ सुनते और समाधान खोजते हैं, जिससे भावनात्मक समर्थन मिलता है। इससे तनाव कम होता है और मानसिक स्वास्थ्य बेहतर होता है।

इस प्रकार स्वयं सहायता समूह महिलाओं में आत्मविश्वास, आत्मसम्मान, निर्णय क्षमता और सामाजिक निर्भरता से मुक्त स्वतंत्र व्यक्तित्व का विकास करते हैं, जो सशक्तिकरण का मनोवैज्ञानिक आधार बनता है।

चुनौतियाँ

स्वयं सहायता समूह (Self Help Groups – SHGs) महिलाओं की सामाजिक प्रतिष्ठा और लैंगिक समानता को बढ़ाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं, फिर भी इनके प्रभाव को सीमित करने वाली अनेक सामाजिक, आर्थिक और संरचनात्मक चुनौतियाँ विद्यमान हैं। सबसे प्रमुख बाधा पितृसत्तात्मक मानसिकता है। कई परिवारों में आज भी महिलाओं के घर से बाहर जाने, बैठकों में

DOI: 10.48175/568

IJARSCT
International Journal of Advanced Research in Science, Communication and Technology
International Open-Access, Double-Blind, Peer-Reviewed, Refereed, Multidisciplinary Online Journal
ISSN: 2581-9429
Volume 6, Issue 2, March 2026
Impact Factor: 8.2

भाग लेने या आर्थिक निर्णय लेने को सहज रूप से स्वीकार नहीं किया जाता, जिससे उनकी सक्रिय भागीदारी प्रभावित होती है।

दूसरी चुनौती शिक्षा और जागरूकता की कमी है। कम शिक्षित महिलाएँ लेखा-जोखा, बैंकिंग प्रक्रिया, डिजिटल भुगतान और सरकारी योजनाओं को समझने में कठिनाई अनुभव करती हैं, परिणामस्वरूप वे समूह की गतिविधियों में पूर्ण रूप से सक्षम भूमिका नहीं निभा पातीं।

आर्थिक स्तर पर पूंजी और विपणन की सीमाएँ भी महत्वपूर्ण हैं। कई बार SHG के माध्यम से शुरू किए गए कार्य छोटे स्तर पर ही रह जाते हैं क्योंकि उत्पादों के लिए स्थायी बाजार, ब्रांडिंग और परिवहन सुविधाएँ उपलब्ध नहीं होतीं। इससे आय सीमित रहती है और सामाजिक प्रतिष्ठा में अपेक्षित वृद्धि नहीं हो पाती।

इसके अतिरिक्त समय और पारिवारिक जिम्मेदारियाँ भी बाधा बनती हैं। घरेलू कार्य, बच्चों की देखभाल और सामाजिक अपेक्षाएँ महिलाओं को उद्यम और समूह गतिविधियों के लिए पर्याप्त समय नहीं देतीं।

इस प्रकार सामाजिक स्वीकृति, शिक्षा, संसाधन और बाजार से जुड़ी बाधाएँ SHG के सकारात्मक प्रभाव को सीमित करती हैं, जिन्हें दूर करना आवश्यक है।

निष्कर्ष

स्वयं सहायता समूह महिलाओं की सामाजिक प्रतिष्ठा और लैंगिक समानता को सुदृढ़ करने का एक प्रभावी माध्यम सिद्ध हुए हैं। सामूहिक बचत, ऋण सुविधा, प्रशिक्षण और नियमित सहभागिता के माध्यम से महिलाओं में आर्थिक आत्मनिर्भरता के साथ आत्मविश्वास और सामाजिक पहचान का विकास हुआ है। परिवार में उनका योगदान बढ़ने से निर्णय-निर्माण में भागीदारी भी बढ़ी है, जिससे पारंपरिक आश्रित भूमिका में परिवर्तन आया है। वे अब केवल गृहकार्य

तक सीमित न रहकर शिक्षा, स्वास्थ्य, बच्चों के भविष्य तथा सामुदायिक गतिविधियों से जुड़े मुद्दों पर अपनी राय रखने लगी हैं।

समुदाय स्तर पर SHG ने महिलाओं को सार्वजनिक मंचों, ग्रामसभा और सामाजिक अभियानों से जोड़ा है, जिससे उनकी नेतृत्व क्षमता और सम्मान में वृद्धि हुई है। इस प्रक्रिया ने लैंगिक असमानताओं को कम करने में सकारात्मक भूमिका निभाई है तथा पुरुषों और महिलाओं के बीच सहयोगात्मक संबंधों को प्रोत्साहित किया है।

हालाँकि पितृसत्तात्मक मानसिकता, सीमित संसाधन, शिक्षा की कमी और बाजार संबंधी बाधाएँ अभी भी पूर्ण समानता की राह में अवरोध उत्पन्न करती हैं, फिर भी SHG ने सामाजिक परिवर्तन की दिशा में ठोस आधार तैयार किया है। उचित प्रशिक्षण, जागरूकता और संस्थागत सहयोग मिलने पर इसका प्रभाव और व्यापक हो सकता है।

अतः यह कहा जा सकता है कि स्वयं सहायता समूह केवल आर्थिक कार्यक्रम नहीं, बल्कि सामाजिक सशक्तिकरण की ऐसी प्रक्रिया है जो महिलाओं को सम्मान, सहभागिता और समान अधिकारों की ओर अग्रसर करती है तथा एक अधिक न्यायपूर्ण और संतुलित समाज के निर्माण में सहायक सिद्ध होती है।

सन्दर्भ ग्रन्थ

1. Mayoux, Linda. (2001). “Tackling the Down Side: Social Capital, Women’s Empowerment and Micro-finance in Cameroon.” *Development and Change*, 32(3).
2. Swain, Ranjula Bali & Varghese, A. (2009). “Does Self Help Group Participation Lead to Asset Creation?” *World Development*, 37(10).
3. Harper, Malcolm. (2012). *Practical Microfinance: A Training Guide for South Asia*. New Delhi: Vistaar Publications.

IJARSCT

International Journal of Advanced Research in Science, Communication and Technology

International Open-Access, Double-Blind, Peer-Reviewed, Refereed, Multidisciplinary Online Journal

ISSN: 2581-9429

Volume 6, Issue 2, March 2026

Impact Factor: 8.2

4. Sharma, K. C. (2007). *Microfinance and Women Empowerment*. New Delhi: Deep & Deep Publications.
5. APMAS. (2009). *Quality and Sustainability of Self-Help Groups in India*. Hyderabad: Andhra Pradesh MahilaAbhivruddhi Society.
6. SEWA (Self Employed Women's Association). *Annual Reports and Case Studies on Women's Livelihoods*. Ahmedabad: SEWA.
7. https://aajeevika.gov.in
8. https://wcd.nic.in
9. https://eshakti.nabard.org

Copyright to IJARSCT
www.ijarsct.co.in

DOI: 10.48175/568